IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

बीसवी सदी के प्रमुख लघुकथाकारों के लघुसाहित्य का शिल्पः एक विवेचनात्मक अध्ययन

Raj Kishan Parmar

Research Scholar, Dept. of Hindi, Pacific College of Social Science and Humanities, Pacific University, Udaipur, Rajasthan, India

सार

जीवन एक अविरल धारा है जो बहते हुए आगे बढ़ती जाती है, जिसमें बहुत कुछ पीछे छूट जाता है, तो बहुत कुछ नया जुड़ता भी जाता है। वस्तुतः यही है जीवन की विकास-यात्रा । ठीक इसी प्रकार साहित्य और उसकी तमाम विधाएँ हैं जिनमें लघुकथा भी एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में स्थापित है, उसमें भी समय के साथ-साथ अपनी-अपनी क्षमता के साथ पुराने लघुकथाकार पीछे छूटते जाते हैं और बढ़ते समय के साथ-साथ नये-नये लघुकथाकार आते-जाते हैं और अपनी सृजनात्मकता से अपनी पहचान बनाते हुए लघुकथा की विकास-यात्रा में उसके सहयात्री बन जाते हैं ।
जब चर्चा लघुकथा के वर्तमान यानी इक्कीसवीं सदी करनी है तो इससे पूर्व हमें इसकी नींव तक जाना पड़ेगा जिस पर लघुकथा का आज यह सुन्दर भवन खड़ा है। जब हम नींव पर आते हैं तो हमें संस्कृत भाषा में रचित कथा एवं कथात्मक ग्रंथों को भी देखना पड़ता है। हिन्दी संस्कृत की बेटी है, इसने उसी की कोख से जन्म लिया है, अतः हम वेद,पुराण, उपनिषद् इत्यादि ऐसे तमाम उल्लेखनीय ग्रंथों में प्रकाशित कथाओं और पिफर प्राकृत एवं पाली भाषाओं में प्रकाशित कथा एवं कथात्मक ग्रंथों का अवलोकन करने हेतु विवश होते हैं। कारण जीवधारियों की तरह, किसी साहित्यिक विधा के जन्म की कोई निश्चित तिथि नहीं हो सकती । साहित्यिक विधाएँ तो शनैः शनैः विकास करते हुए कब अपना आकार ग्रहण कर लेती हैं, पता तक नहीं चलता और जब पता चलता है, तब हम फिर अतीत की ओर चलते हैं।यह सही है प्रत्येक विधा पर अपने समय, तत्कालीन राजनीति, सामाजिक परिवर्तन, मानव-मनोविज्ञान इत्यादि का प्रभाव पड़ता है, लघुकथा भी इसका अपवाद नहीं है।

परिचय

सुकेश साहनी कई दशकों से हिन्दी लघुकथा साहित्य के परिवर्द्धन में सक्रिय हैं। उनकी रचनाएँ कई भाषाओं में अनूदित और चर्चित रही हैं। सुकेश का लेखकीय व्यक्तित्व अपने समशील रचनाकारों की तरह यथार्थ की पकड़ और सम्प्रेषण की सहजता के आग्रह से निर्मित है लेकिन जो बात उन्हें अलग पहचान देती है वह उनके शिल्प की मौलिकता में निहित है। इसमें सन्देह नहीं कि उनकी लघुकथाओं का विधान किसी एक ढर्रे पर लीकोंलीक नहीं चलता, बल्कि कथ्य के अनुरूप अभिव्यक्ति को मारकता प्रदान करने के लिए वे शैली-शिल्प के स्तर पर तरह-तरह के प्रयोग करते दिखाई देते हैं। लघुकथा की प्रभवशीलता के लिए व्यंग्य, ध्वनि या व्यंजना की शक्ति को वे पहचानते हैं और उसका भली प्रकार इस्तेमाल करने में कुशल हैं। अतिरंजना और फैंटेसी का उन जैसा सटीक प्रयोग हर किसी के वश की बात नहीं। विस्मय और आकस्मिकता को भी सुकेश अच्छी तरह साध लेते हैं तथा साधारण स्थितियों के माध्यम से असाधारण निष्कर्षों को दर्शाना भी उन्हें अपनी विधा का उस्ताद बनाता है। संकेतों और अप्रस्तुतों की योजना उनकी कथाओं को काव्यभाषा का अतिरिक्त संस्कार प्रदान करती है। साथ ही यह भी कहना जरूरी है कि मनुष्य और समाज की तमामतर विकृतियों और विच्युतियों के समाकालीन बोध के बावजूद यह कथाकार पराजित या हताश नहीं है, बल्कि मनुष्यता की सर्वोपरिता में विश्वास के कारण उसकी कलम जुझारू पात्रों का सृजन करने से बाज नहीं आती। यही वह चीज है जो सुकेश साहनी के लघुकथाकार को सामाजिक परिवर्तन के लिए समर्पित रचनाकार का दर्जा दिलाने में समर्थ है।[1,2,3]
लघुकथा अपनी सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता और व्यंजकता में बहुत बार कविता के सर्वाधिक निकट की विधा प्रतीत होती है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

संक्षिप्तता या सामाजिकता तो इस विधा की केन्द्रीय शर्त है ही। यही कारण है कि यहाँ शीर्षक भी कथ्य और शिल्प का अविभाज्य अंग होता है। इस दृष्टि से सुकेश के कुछ शीर्षक खूब सटीक बन पड़े हैं-गोश्त की गन्ध, चादर, आइसबर्ग, नपुंसक, शिनाख्त। ये सभी कथ्य के सबसे मार्मिक और विचलित करनेवाले अंश को अंजाने ही अग्रप्रस्तुत कर देते हैं।
इसके अलावा अपनी इन लघुकथा रचनाओं में सुकेश समापन के सम्बन्ध में काफी सतर्क प्रतीत होते हैं। आरम्भ कहीं से भी कर सकते हैं वे, और उसे रोचक भी बना सकते हैं; पर अन्त के मामले में वे रिस्क लेने के पक्षधर नहीं है। वे अपने प्रतिपाद्य को पाठक के मन-मस्तिष्क में रोपित करना चाहते हैं ताकि लघुकथा अपने सामाजिक उद्देश्य में सफल हो सके; भले ही इसके लिए उन्हें अन्त में लेखकीय टिप्पणी जोड़नी पड़े। दरअसल इस तकनीक द्वारा वे व्यंजना को अभिधा में ढालते हैं और रचना को सुख-बोध बनाने का यत्न करते हैं। यही कारण है कि 'गोश्त की गंध' के अन्त में वे यह कहना नहीं भूलते कि ''काश, यह गोश्त की गन्ध उसे बहुत पहले ही महसूस हो गई होती!'' 'चादर' का अन्त भी प्रति उत्कर्ष से किया गया है जो पाठक को एक्टिव बनाना चाहता है-''मैंने उसी क्षण उस खूनी चादर को अपने जिस्म से उतार फेंका।'' ''जागरूक'' का अन्त इसकी तुलना में अधिक सांकेतिक है, ''उनके आदेश पर बहुत-से वाचमैन लाठियाँ-डण्डे लेकर कोठियों से बाहर निकले और उस कुत्तों पर पिल पड़े।''[5,7,8]
'आइसबर्ग', 'नपुंसक और 'शिनाख्त' का भी समापन लेखकीय टिप्पणी और चरम घटना को जोड़कर अत्यन्त कलापूर्ण और प्रभावी ढंग से किया गया है। 'आइसबर्ग' के अन्तिम अनुच्छेद में कई सारी भीतरी और बाहरी घटनाएँ तीव्रता के साथ घटित होती हैं और पाठक की चेतना को झटका-सा देती हैं। यह विचित्र विरोधाभास अथवा विडम्बना ही है कि अब तक असुरक्षित अनुभव करता हुआ जो युवक बार-बार भयग्रस्त होकर अपनी पहचान बदल रहा था, उत्तेजित सिखों के परस्पर झगड़ने पर खुद को सुरक्षित महसूस करता है। लेखक यहाँ यह भी सूचना देता है कि दंगाग्रस्त क्षेत्र में यह युवक अपने दोस्त के घर दो दिन बिताकर आया है इसीलिए उस युवक को दंगे के भयावह अमानुषिक दृश्य भी याद आते हैं, लेकिन लेखक अपनी कहानी को एक सकारात्मक नोट पर समाप्त करता है-बेटे को शरारतों की मधुर स्मृति के साथ। यथा-''एकाएक लगा कि वह बेहद थक गया है। कर्फ्यू के बीच दोस्त के घर बिताए गए दो दिन उसकी आँखों में तैर गए-लुटती दुकाने....भागते-चीखते लोग...जलते मकान....टनटनाती दमकलें। उसने अपना शरीर ढीला छोड़ दिया। अगले ही क्षण वह सीट से सिर टिकाए अपने बेटे की नन्हीं शरारतों को याद कर मुस्करा रहा था।'' इसी प्रकार 'नपुंसक' का अन्त विपथन (डिफ्लेक्षन) की तकनीक से किया गया है। उठा लाई गई मजदूरिन पर सामूहिक दुष्कर्म कर रहे युवकों के बीच शेखर अपनी संवेदनशीलता के कारण विरल आचरण करता है परन्तु कापुरुष कहे जाने के डर से अपने साथियों पर इसे प्रकट नहीं करता। परिणामतः उसका अन्तरंग स्वयं उसे धिक्कारता है मानो मुक्तिदाता स्वयं पौरुषहीनता का शिकार हो-अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए अपने ही पदचाप से उसके दिमाग में धमाके-से हो रहे थे-''नपुंसक...नपुंसक...! मुक्तिदाता!....नपुंसक!''''शिनाख्त' का अन्त इस दृष्टि से विशिष्ट है कि इसके माध्यम से आज के मनुष्य की पैसे की भूख का वह रूप सामने आता है जिसे लाशखोरी ही कहा जा सकता है। जैसे ही यह घोषणा होती है कि साम्प्रदायिक दंगबों में मारे गए लोगों के लिए पाँच-पाँच लाख रुपया मुआवजा दिया जाएगा, वैसे ही बलात्कार के बाद क्रूरतापूर्वक मार दी गई अज्ञात युवती के अनेक रिश्तेदार पैदा हो जाते हैं, ''सर! ताज्जुब है...उस सिर कटी युवती की लाश पर अपना दावा करनेवाले बहुत-से लोग बाहर खड़े है, सर!''[9,10,11]
वस्तु-चयन में लेखक ने सामाजिक यथार्थ पर दृष्टि केन्द्रित रखी है। दहेज, घरेलू हिंसा, बलात्कार, स्त्री का बहुमुखी शोषण, अन्धविश्वास, विवेकहीनता, क्रूरता, अमानुषिकता, भीड़ का उन्माद, मानवीय सम्बन्धों का क्षरण, मीडिया, श्रम से जुड़ा आत्मसम्मान, बालश्रम, वृद्धावस्था, गरीब की साधनहीनता, मध्य वर्ग की लालसा, हिन्दुस्तानियों की अंग्रेजियत और बाजारवाद का चक्रव्यूह जैसे प्रत्येक संवेदनशील प्राणी को विचलित करनेवाले ज्वलन्त विषयों को उन्होंने मार्मिक घटनाओं और जीवन्त पात्रों के सहारे झकझोरनेवाली अभिव्यंजना प्रदान की है। कथ्य और शिल्प की अनुरूपता के कारण ही ये लघुकथाएँ चुटियल होने का अहसास दिलाती हैं और साथ ही चोट भी करती हैं। मर्मस्थल पर वार करने में इनकी चरितार्थता का मर्म निहित है।
अतिरंजना, फैंटेसी, आकस्मिकता और विस्मय तत्त्व के सहारे बुनी गई लघुकथाओं में सुकेश ने सामाजिक यथार्थ के क्रूर और असामाजिक चेहरे के विद्रूप को रूपायित करने में पूरी सफलता पाई है। इस प्रकार की लघुकथाओं में पाठक को विचलित करने और आत्मसाक्शात्कार के लिए विवश करने की ताकत दिखाई देती है। अगर कहा जाए कि इस शिल्प में सुकेश साहनी की कहानी-कला सर्वाधिक प्रभविष्णुता के साथ उभरी है, तो शायद गलत न होगा। इस कथन को प्रमाणित करने के लिए 'गोश्त की गंध', 'चादर', 'जागरूक', और 'ओए बबली'को देखा जा सकता है। 'गोश्त की गंध' में दामाद जब भोजन के लिए बैठता है तो यह देखकर वह सन्न रह जाता है कि सब्जी की प्लेटों में खून के बीच आदमी के गोश्त के बिलकुल ताजा टुकड़े तैर रहे थे। आगे यह भी बताया गया है कि सास, ससुर और साले के किस-किस अंग का गोश्त दामाद की खातिरदारी के लिए उतारा गया है और किस तरह उसे छिपाने की असफल कोशिश केवल इसलिए की जा रही है कि दामाद नाराज न हो जाए। 'चादर' भी

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

प्रतीकात्मक है। पवित्र नगर और पवित्र पर्वत की कल्पना का रहस्य तब खुलता है जब आख्याता अपनी चादर पर खून से लाल और तर थीं जबकि सभी हट्टे-कट्टे थे और कोई खून-खराबा भी नहीं हुआ था। चेतना को झटका तो तब लगता है जब यह बात समझ में आती है कि जिसकी चादर जितनी अधिक रक्तरंजित है वह उतना ही आश्वस्त होकर मूँछे ऐंठ रहा है। साम्प्रदायिक दंगों की जेनेसिस पर ऐसी कहानियाँ शायद कम ही लिखी गई होंगी। 'जागरूक' की अतिरंजना और आकस्मिकता इन दोनों कहानियों से भिन्न प्रकार की है। यहाँ संकटग्रस्त युवती की चीख-पुकार पर सभ्य संभ्रान्त भद्रलोक कान मूँदे सोया रहता है; लेकिन लावारिस कुत्तों बदमाशों पर भौंकते हैं। वश न चलने पर कुलीन कोठियों के विशाल बन्द दरवाजों तक भी जाते हैं। व्यंग्यपूर्वक लेखक यह दर्ज करता है कि इस प्रयास पर लोहे के बड़े-बड़े गेटों के उस पार तैनात विदेशी नस्ल के पालतू कुत्तों उसे हिकारत से देखने लगे। अन्ततः जब गुण्डे बलात्कार के अपने उद्देश्य में सफल होते दीखते हैं गली का कुत्ता मुँह उठाकर जोर-जोर से रोने लगता है। लड़की का रोना जिन्होंने नहीं सुना उन्हें कुत्तों का रोना सुन जाता है क्योंकि कुत्तों का रोना अशुभ होता है। लड़की का रोना क्या होता है-शुभ या अशुभ? ऐसे समाज का क्या होगा-कल्याण या विनाश? कई सवाल पाठक को बेचैन करते हैं; और लेखक सूचना देता है कि भद्र लोगों के इशारे पर बहुत-से वाचमैन अशुभसूचक कुत्तों को मार रहे हैं। लावारिस कुत्तों की तुलना में हमारा यह तथाकथित भद्रलोक किस तरह का पामोरियन कुत्ता है! कुत्तों जागरूक हैं, और मनुष्य? 'ओए बबली' में लेखक ने स्वप्न की तकनीक अपनाई है। पानी की खोज! निरन्तर और असमाप्त खोज। पानी नहीं मिलता। रेता मिलती है। गंगा-जमुनी दोआबा रेगिस्तान में बदल जाता है। कुआँ मिलता है-टशन और प्यास के विज्ञापनोंवाली खूबसूरत लड़कियों के बीच। कुएँ में पानी नहीं है, बर्फ के ढेले हैं, कूल ड्रिंक की बोतले हैं। माँ के लिए पानी खोजती बेटी फ्रॅाक में बर्फ के ढेले भरकर दौड़ती है पर बर्फ तो बिना पिघले ही उड़नछू हो जाती है। इस बीच माँ कुआँ खोद लेती है। स्वप्न टूटता है माँ के इस निर्देश के साथ कि "चल...जल्दी कर बेटी! बर्तनों की कतारें लगने लगी हैं। पानी का टैंकर आता ही होगा। आज तो घरमें खाना पकाने के लिए भी पानी नहीं है...बबली!1" और इस तरह आभासी विश्व पर यथार्थ पाठक को अपनी गिरफ्त में ले लेता है।[12,13,15]

अपनी कथाभाषा के गठन में सुकेश जहाँ सहजता और प्रतीकात्मकता को मुहावरेदानी और आमफहम शब्दावली के सहारे एक साथ साधते है, वहीं सटीक विशेषणों, उपमानों और विवरणों के सहारे अभिव्यंजना को सौन्दर्यपूर्ण भी बनाते हैं। ये उनकी कथा-रचना के वे इलाके हैं जो उन्हें कथाकार के साथ-साथ उत्कृष्ट शैलीकार के रूप में प्रतिष्ठित कराने के निमित्त पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते है। अतः सामाजिक यथार्थ और कलात्मकता को अपनी लघुकथाओं में साथ-साथ सम्भव कर सकनेवाले लेखकों की पंक्ति में सुकेश साहनी की प्रतिष्ठा सुनिश्चित मानी जानी चाहिए।

विचार-विमर्श

सुकेश साहनी (जन्म : 5सितंबर 1956, लखनऊ, उ.प्र.), हिंदी के लघुकथा लेखक हैं, जिनका लघुकथा की विकास यात्रा में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।[1] उनके तीन लघुकथा संग्रह 'डरे हुए लोग'[2] 'ठंडी रज़ाई'[3]'साइबरमैन' और 'प्रतिनिधि लघुकथाएँ प्रकाशित हैं। उनकी दोनों पुस्तकें क्रमश: 'डरे हुए लोग' का पंजाबी, गुजराती, मराठी व अंग्रेज़ी में तथा 'ठंडी रज़ाई' का अंग्रेज़ी व पंजाबी भाषा में अनुवाद हुआ है। इसके अतिरिक्त एक कहानी संग्रह 'मैग्मा और अन्य कहानियाँ' तथा बालकथा संग्रह 'अक्ल बड़ी या भैंस' प्रकाशित हुए हैं।'डरे हुए लोग' और 'ठंडी रजाई' का अनुवाद श्याम सुंदर अग्रवाल ने किया है। उनकी लघुकथा 'रास्तों से दोस्ती' अमनजोत सिंह सढौरा द्वारा पंजाबी में अनुवाद की गई। उनकी कुछ लघुकथाएँ जर्मन भाषा में भी अनूदित हुईं हैं। 'रोशनी' कहानी पर दूरदर्शन के लिए टेलीफिल्म का निर्माण किया है। उनकी एक और पुस्तक "लघु अपराध कथाएं "[4] प्रकाशित हुई हैं और उन्होने लघुकथाओं के दर्जन से अधिक संकलनों का संपादन भी किया है।'साहित्य आज तक 2018 में उन्होंने प्रतिभाग किया और अपनी चुनिंदा रचनाओं का पाठ किया। गद्य कोश में उनकी अनूदित और मौलिक रचनाएँ संकलित हैं।लघुकथा के क्षेत्र में उनका योगदान अति महत्त्वपूर्ण है और विधा के विकास में बहुत ही सहायक सिद्ध है।उन्हें 1994 में डॉ°परमेश्वर गोयल लघुकथा सम्मान, 1996 में माता शरबती देवी पुरस्कार,1998 में डॉ° मुरली मनोहर हिन्दी साहित्यिक सम्मान तथा 2008 में माधवराव सप्रे सम्मान2008,वीरेन डंगवाल स्मृति साहित्य सम्मान 2018 तथा अन्य कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।[5]

लघुकथा मात्र मनोरंजन की साहित्यिक विधा नहीं, अपितु सशक्त सामाजिक सन्देश के धागे में गूँथी हुई समाज के रंग-बिरंगे मनकों से युक्त माला कही जा सकती है; जो आत्मरंजन का श्रेष्ठ माध्यम भी है। आजकल साहित्य की अनेक विधाएँ पाठकों के समय तथा पढ़ने की आदत की कमी के कारण निरंतर मुख्य धारा से विलुप्त होती जा रही हैं। वर्तमान परिस्थितियों में लघुकथा अत्यधिक उपयोगी विधा इसलिए है; क्योंकि यह सीमित शब्दों में अत्यंत संवेदनशील एवं सारगर्भित तथ्यों को रोचक एवं सरल

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

ढंग से प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। आधुनिक तीव्रगामी वातावरण में कम समय होते हुए भी पाठक लघुकथा के माध्यम से आत्मरंजन के साथ ही अत्यंत प्रासंगिक एवं समकालीन विषयों को समझ सकता है।

वस्तुतः लघुकथाकेवल विषयों को प्रस्तुत ही नहीं करती ;अपितु अपने आप में इतनी परिपूर्ण होती है; कि यदि पाठक संवेदनशील है ,तो छोटी सी विषयवस्तु में ही गंभीर से गंभीर समस्याओं का समाधान भी खोज लेता है। लघुकथा किसी भी विषयवस्तु पर हो; इतना निश्चित है कि यह विषय का गंभीर दार्शनिक चिंतन प्रस्तुत करती है। सौभाग्य से मुझे इस विधा में अनेक विषयवस्तुओं पर पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक लघुकथाएँ ऐसी हैं कि अपनी अंतिम पंक्ति तक आते-आते एक ज्वलंत समस्या के प्रति विचारों के साथ ही मन में आक्रोश भी स्फुरित कर गईं।[17,18,19]

ऐसी ही एक लघुकथा है- श्री रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' की 'धर्म-निरपेक्ष'। यह लघुकथा कुतूहल एवं रोमांच से प्रारंभ होकर एक ज्वलंत एवं चिंतनीय समकालीन मुद्दे पर जाकर समाप्त होती है। मुद्दा ऐसा की जिस पर अनेकानेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। यह लघुकथा मन और मष्तिष्क दोनों को छूने के साथ ही गहरे से पैठ भी बना गयी। तटस्थ दृष्टिकोण अपनाते हुए; कथा की जितनी भी प्रशंशा की जाय कम ही है।

प्राचीन समय से धर्म मानव समाज हेतु दिग्दर्शन का हेतु एवं जीवन पद्धति के रूप में प्रतिष्ठित था; आधुनिक युग में वही मानव समाज की सबसे बड़ी त्रासदी का हेतु बन गया है। भारतवर्ष की स्थिति इस पक्ष पर चिंताजनक इसलिए है; क्योंकि धर्म, जाति एवं संप्रदाय के नाम पर बनता हुआ यहाँ का समाज धर्मनिरपेक्षता की बात सिद्धांततः मानते हुए भी व्यवहारिक धरातल पर अभी भी व्यर्थ के रक्तपात एवं राजनीतिक संघर्ष में ही उलझा हुआ है। इस कारण यहाँ का समाज वास्तविक उत्त्थान पर केन्द्रित नहीं हो पता। इसी धार्मिक एवं सम्प्रदायगत रक्तपात को आधार बनाकर श्री काम्बोज की यह मार्मिक एवं सारगर्भित लघुकथा मानव समाज का धर्मान्धता वाला पक्ष प्रस्तुत करने के साथ ही अंततः एक गहन शिक्षा भी प्रस्तुत करती है। कथाकार अपनी बात को कहने में पूर्ण से भी आगे निकल आये; क्योकि धर्म कौतूहल अंत में मानव के धार्मिक रक्तपात वाले कृत्य पर घृणा में परिवर्तित हो जाता है। जब धर्म के नाम पर लड़ते हुए दो आक्रामक व्यक्तियों के चाकू से हुए संघर्ष में दोनों सड़क पर लुढ़क जाते हैं तथा एक कुत्ता ,जो हड्डी को चबा रहा है; हड्डी छोड़ कर जब मांस की लालसा में उन व्यक्तियों को नोंचने के लिए आगे बढ़ता है; उन्हेंहे गोश्त के रूप में नोंचने के स्थान पर वह कुत्ता उनके उपर मूत्र विसर्जन कर देता है। इस प्रकार लेखक बहुत कम शब्दों में बड़ी पटुता के साथ पाठक को यथोचित सन्देश देने में शत- प्रतिशत सफल रहे हैं। साथ ही निश्चित रूप से ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक मात्र सिद्धांत में ही नहीं व्यवहार में भी मानवतावादी संवेदनशील हृदय रखते हैं; क्योंकि व्यक्ति साहित्यकार होने के साथ ही जब एक अच्छा दृष्टिकोण रखता हो और एक अच्छा व्यक्ति हो तभी वह ऐसी रचना को लिपिबद्ध कर सकता है अन्यथा नहीं।

धर्म में नाम पर लड़ने वाले लोग पशु से भी तुच्छ हैं; ऐसा सन्देश देने में लेखक पूर्णतः सफल रहे हैं। अंत में लेखक की इस कथा के सम्बन्ध में जो सन्देश प्रस्तुत होता है वह उपनिषद दर्शन के उस श्लोक से सम्बन्ध रखता है जिसमें कहा गया-

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात ये तेरा है, ये मेरा है; ऐसी गणना संकुचित मानसिकता के लोग करते है; उदार चरित्र वाले लोग तो सम्पूर्ण विश्व को कुटुंब के समान समझते है। यद्यपि इस प्रकार के विचारों से प्राचीन भारतीय वांग्मय संपन्न है; तथापि वर्तमान परिस्थितियों में यह विचार थोड़ा कमजोर पड़ गया है। इस दृष्टि से 'धर्म निरपेक्ष' शीर्षक से यह लघुकथा अत्यंत प्रभावी एवं समकालीन परिदृश्य में प्रासंगिक भी है; क्योंकि धर्म के नाम पर होने वाले रक्तपात को जब तक नहीं रोका जायेगा; मानव समाज का वास्तविक उत्थान संभव नहीं है।

परिणाम

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर के सहायक आचार्य व विश्व भाषा अकादमी की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी ने एक व्यक्ति द्वारा लिखित अधिकतम अंग्रेजी लघुकथाओं की पुस्तक के रिकॉर्ड को अपने नाम किया

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

है। उन्हें यह रिकॉर्ड अंग्रेजी लघुकथाओं की एक पुस्तक, जिसका शीर्षक 'पुडिंग ऑफ ट्रूथ: ए कलेक्शन ऑफ इंग्लिश लघुकथाज़' है, के लिए प्राप्त हुआ है, जो इसी वर्ष मार्च माह में नोशन प्रेस द्वारा प्रकाशित हुई है। इसके पूर्व भी डॉ. छतलानी ने विविध अकादमिक विषयों व कार्यकर्मों के सर्वाधिक प्रमाणपत्र अर्जित करने के दो रिकॉर्ड पंजीकृत किए हैं। छतलानी को 140 से अधिक सॉफ्टवेयर व वेबसाइट निर्माण हेतु बेस्ट सॉफ्टवेयर रिसर्च एंड डवलपमेंट एनालिस्ट, सीरिया से वर्ल्ड कल्चरल क्रिएटिविटी अंबेसेडर व भूटान की संस्थाओं सहित कई राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से सम्मान भी प्राप्त हो चुके हैं।

छतलानी ने पिछले रिकॉर्ड की तरह इस रिकॉर्ड को भी अपने स्वर्गीय पिता को समर्पित करते हुए कहा कि उनकी बताई राह पर चल कर ही यह कुछ हासिल किया है। डॉ. चंद्रेश ने चौथे विश्व रिकॉर्ड के लिए भी कार्यरत हैं।

विद्यापीठ के कुलपति प्रो. कर्नल एस.एस. सारंगदेवोत ने डॉ. छतलानी को बधाई देते हुए कहा कि छतलानी ने विद्यापीठ के लिए भी कई विशेष कार्य किए हैं, अधिकतर सभी प्रमुख कार्यों में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही हैऔर उनके द्वारा किए जा रहे कार्य अनुकरणीय हैं। उन्होंने गंभीर कोविड के बाद लम्बी बीमारी से संघर्षरत होने के बावजूद भी यह मुकाम हासिल किया है, जो उनकी अनूठी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

डॉ. छतलानी को शिक्षा, शोध व साहित्य के क्षेत्र में योगदान के बीस सम्मान प्राप्त हो चुके हैं, उन्होंने ग्यारह पुस्तकों का लेखन व आठ का संपादन किया है, साथ ही उनके 30 शोध पत्र प्रकाशित व 40 अन्य शोध पत्र राष्ट्रीय-अतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रस्तुत हुए हैं।

इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स भारत सरकार से पंजीकृत है तथा एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से सम्बंधित है। यह नेशनल रिकॉर्ड बुक्स, वियतनाम की अनुपालना करते हुए विभिन्न भारतीय रिकार्ड्स को सूचीबद्ध करता है।

लघुकथाओं की इस श्रृंखला में मेरी पसंद की अनेक और भी रचनाएँ हैं, किन्तु समकालीन स्थितियों को चित्रित करती श्री सुकेश साहनी की कसौटी लघुकथा मुझे अत्यधिक प्रभावित करती है; यह रचना आधुनिक समाज में नारी जीवन की विसंगतियों को चित्रित करती है। एक और महिला अंतरिक्ष यात्री बनकर ब्रहमांड में रहस्यों को उद्घाटित करने में पुरुषों से किसी भी तरह पीछे नहीं दूसरी ओर भारतीय सन्दर्भ में बात की जाए, तो वह संस्कारों में जकड़े हुए समाज का भी निर्वहन करती है। अंतर्द्वंद्वो में घिरा उसके जीवन के अनेक पक्षों को प्रस्तुत करने में लेखक पूर्णत: सफल रहे हैं। वैश्विक विकास के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी की इच्छा रखने वाली महिला से कंपनी की अपेक्षाओं एवं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मापदंडों में निरंतर उलझा हुआ महिला समाज कैसे मानसिक संघर्ष से हर दिन दो-चार होता है इस कथा के माध्यम से लेखक ने यही चित्रित करने का प्रयास किया है; जिसमे वे सफल हुए।[20,21,22]

एक पुरुष साहित्यकार महिलाओं के मनोभावों एवं समस्याओं का ऐसा यथोचित चित्रण कर पाए; यह वास्तव में उल्लेखनीय है। इस प्रकार लेखक अपने लक्ष्य में पूर्णत: सफल हुए हैं।

कहना प्रासंगिक है कि यद्यपि भारतीय महिला शैक्षिक दृष्टि से कितनी भी सुयोग्य क्यों न हो; किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में; यदि वह अपने संस्कृति को दरकिनार नहीं करती और तथाकथित आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ में शामिल नहीं होती ,तो वह अपनी योग्यता के अनुरूप नौकरी प्राप्त नहीं कर सकती। यदि नौकरी के हिसाब से स्वयं को ढालती है तो तथाकथित संस्कारों को खो बैठती है; और यदि संस्कारों के अनुसार चलती है ,तो वह आधुनिक युग की प्रतिस्पर्धाओं में पीछे छूट जाती है। इन्ही अंतर्द्वंदों से जूझती भारतीय महिला की अनेक क्षमताएँ तो स्वयं के मानसिक द्वंद्व एवं सामाजिक मापदंडों से जूझने में ही व्यर्थ हो जाती हैं।

लेखक अपने सन्देश को पाठक तक पहुचाने और एक नए ढंग से विचार स्फुरित करने के प्रयोग में खरे उतरते हैं। इस प्रकार के लेखन में नैरन्तर्य आवश्यक है।

सुकेश साहनी

खुशी के मारे उसके पाँव जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। साइबर कैफे से बाहर आते ही उसने घर का नम्बर मिलाया।

''पापा!...'' उससे बोला नहीं गया।

''हमारी बेटी ने किला फतेह कर लिया! है न?''

''हाँ, पापा!'' वह चहकी, ''मैंने मुख्य परीक्षा पास कर ली है। मेरिट में दूसरे नम्बर पर हूँ !''

''शाबाश! मुझे पता था... हमारी बेटी है ही लाखों में एक!''

''पापा, पंद्रह मिनट के ब्रेक के बाद एक माइनर पर्सनॉलिटी टेस्ट और होना है। उसके फौरन बाद हमें अपाइंटमेंट लेटर दे दिए जाएँगे। मम्मी को फोन देना...''

''इस टेस्ट में भी हमारी बेटी अव्वल रहेगी। तुम्हारी मम्मी सब्जी लेने गई है। आते ही बात कराता हूँ। आल द बेस्ट, बेटा!''

उसकी आँखें भर आईं। पापा की छोटी–सी नौकरी थी, लेकिन उन्होंने बैंक से कर्जा लेकर अपनी दोनों बेटियों को उच्च शिक्षा दिलवाई थी। मम्मी–पापा की आँखों में तैरते सपनों को हकीकत में बदलने का अवसर आ गया था। बहुराष्ट्रीय कम्पनी में एग्ज़ीकयूटिव आफिसर के लिए उसने आवेदन किया था। आज आनलाइन परीक्षा उसने मेरिट में पोजीशन के साथ पास कर ली थी।

दूसरे टेस्ट का समय हो रहा था। उसने कैफे में प्रवेश किया। कम्प्यूटर में रजिस्ट्रेशन नम्बर फीड करते ही जो पेज खुला, उसमें सबसे ऊपर नीले रंग में लिखा था–''वेलकम–मिस सुनन्दा!'' नीचे प्रश्न दिए हुए थे, जिनके आगे अंकित 'यस' अथवा 'नो' को उसे 'टिक' करना था...

विवाहित हैं? इससे पहले कहीं नौकरी की है? बॉस के साथ एक सप्ताह से अधिक घर से बाहर रही हैं? बॉस के मित्रों को 'ड्रिंक' सर्व किया है? एक से अधिक मेल फ्रेंड्स के साथ डेटिंग पर गई हैं? किसी सीनियर फ्रेंड के साथ अपना बैडरूम शेअर किया है? पब्लिक प्लेस में अपने फ्रेंड को 'किस' किया है? नेट सर्फ़िंग करती हैं? पार्न साइटस् देखती हैं? चैटिंग करती हैं? एडल्ट हॉट रूम्स में जाती हैं? साइबर फ्रेंड्स के साथ अपनी सीक्रेट फाइल्स शेअर करती हैं? चैटिंग के दौरान किसी फ्रेंड के कहने पर खुद को वेब कैमरे के सामने एक्सपोज़ किया है?.....

सवालों के जवाब देते हुए उसके कान गर्म हो गए और चेहरा तमतमाने लगा। कैसे ऊटपटांग और वाहियात सवाल पूछ रहे हैं? अगले ही क्षण उसने खुद को समझाया–बहुराष्ट्रीय कम्पनी है, विश्व के सभी देशों की सभ्यता एवं संस्कृति को ध्यान में रखकर क्वेश्चन फ्रेम किए गए होंगे।

सभी प्रश्नों के जवाब 'टिक' कर उसने पेज को रिजल्ट के लिए 'सबमिट' कर दिया। कुछ ही क्षणों बाद स्क्रीन पर रिजल्ट देखकर उसके पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। सारी खुशी काफूर हो गई। ऐसा कैसे हो सकता है? पिछले पेज पर जाकर उसने सभी जवाब चेक किए, फिर 'सबमिट' किया। स्क्रीन पर लाल रंग में चमक रहे बड़े–बड़े शब्द उसे मुँह चिढ़ा रहे थे– 'सॉरी सुनन्दा! यू हैव नॉट क्वालिफाइड। यू आर नाइंटी फाइव परसेंट प्युअर (pure)। वी रिक्वाअर एटलीस्ट फोर्टी परसेंट नॉटी (naughty)।'

कपों की कहानी"-अशोक भाटिया

आज फिर ऐसा ही हुआ। वह चाय बनाने रसोई में गया तो उसे फिर वही बात याद आ गई। उसे फिर चुभन हुई कि उसने ऐसा क्यों किया?
दरअसल उसके घर की सीवरेज पाइप कुछ दिन से रुकी हुई थीं। आप जानते हैं कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति घर में सहज रूप में नहीं रह पाता। यह आप भी मानेंगे कि यदि जमादार न होते तो हम सचमुच नरक में रह रहे होते। खैर,, दो जमादार जब सीवरेज खोलने के लिए आ गए, तो उसकी साँस में साँस आई । वे दोनों पहले भी इसी काम के लिए आ चुके हैं। एक आदमी थक जाता तो दूसरा बाँस लगाने लगता। कितना मुश्किल काम है! वह कुछ देर पास खड़ा रहा, फिर दुर्गंध के मारे भीतर चला गया। सोचने लगा कि इनके प्रति सवर्णों का व्यवहार आज भी कहीं–कहीं ही समानताशभरा दीखता है। नहीं तो, अधिकतर अमानवीय व्यवहार ही होता है। इतिहास तो जातिवादी व्यवस्था का गवाह है ही, आज भी हम सवर्ण इनके प्रति नफरत दिखाकर ही अपने में गर्व अनुभव करते हैं। यह संकीर्णता नही ंतो और क्या है?
उसके मन में ऐसा बहुत–कुछ उमड़ रहा था कि बाहर से आवाज़ आई,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

''बाऊजी? आकर देख लो।''
वह उत्साह से बाहर गया। पाइप साफ हो चुकी थी।
''बोला, पानी या फिर चाय?'' उसने पूछा।
''पहले साबुन से हाथ धुला दो।'' वे बोले। शायद वे उसकी उदारता को जानते हैं। वह उनके प्रति अपनी उदारता को याद कर खुश होने लगा। हाथ धुलवाते हुए उसने जान–बूझकर दोनों के हाथें को स्पर्श किया ताकि उन पर उसकी उदारता का सिक्का जमने में कोई कसर न रह जाए। पैसे तो पूरे देगा ही, पर लगे हाथ एक अवसर मिल गया। बोला,'' एक बार साबुन लगाने से हाथों की बदबू नहीं जाती। रसोई की नाली रुकी थी, तो मैंने कल हाथ से गंद निकाला था। उसके बाद तीन बार हाथ धोए, तब जाकर बदबू गई।''
''बाऊजी, हमारा तो रोज़ का यही काम है। थोड़ी चाय पिला दो।''
वह यही सुनना चाहता था। यह तो मामूली बात है। इनके प्रति हमारे पूर्वजों द्वारा किए अन्याय के प्रायश्चित के रूप में हमें बहुत कुछ करना चाहिए। लेकिन क्या? यह वह कभी नहीं सोच पाया।
वह रसोई में बड़े उत्साह के साथ चाय बनाने में जुट गया। चाय का सामान डालकर उसने तीन कप निकाले। एक कप बड़ा लिया और दो छोटे, फिर सोचा–यह भेदभाव ठीक नहीं । उन्हे चाय की ज़रूरत मुझसे ज्यादा है। यह सोचकर उसने तीनों एक–से कप उठाए। ऐसे और कई कप रखे थे, लेकिन उसने एक कप साबुत लिया और दो ऐसे लिए जिनमें क्रैक पड़े हुए थे।
उधर चाय में उफान आया, तो उसने फौरन आँच धीमी कर दी।[23,24]

कम्प्यूटर-सुकेश साहनी

पलक झपकते ही वह खूबसूरत युवती में तब्दील हो गया। फिर सम्मोहित कर देने वाले नारी स्वर में बोला, "दो संप्रदायों की उग्र भीड़ को शांत करने के लिए पुलिस को हल्का बल प्रयोग करना पड़ा,जिसके कारण बीस लोगों को चोटें आई है। एहतियात के तौर पर शहर के बारह थाना क्षेत्रों में कर्फ़्यू लगा दिया गया है।"
भीड़ से तेज भनभनाहट उभरी। नदी-नालों में बह-बहकर आ रहे अधजले शवों को लेकर जनता में भारी रोष व्याप्त था।
वह बिजली के बल्ब की तरह दो-तीन बार जला-बुझा, फिर गृहमंत्री के रूप में सामने आकर आवाज़ में मिश्री घोलते हुए बोला, "कृपया अफवाहों पर ध्यान न दें। जहाँ तक नदी-नालों में बहकर आ रहे अधजले शवों का प्रश्न है तो कोई नई बात नहीं है। देश के कुछ भाइयों का मानना है कि अंतिम संस्कार के दौरान अधजले शव को नदी में बहा दिया जाए तो मृतात्मा को मुक्ति मिल जाती है। ये शव को इसी प्रकार के हैं। हम अपने देशवासियों की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हैं।"
भीड़ से फिर तेज शोर उठा।
वह बिजली की-सी तेजी से देश के सबसे बड़े शाही इमाम के रूप में बाद्ल और बोला, ""मैंने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का निरीक्षण किया है,सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं, आप शांति बनाए रखें।""
भीड़ के एक भाग से अभी भी रोषभरी आवाज़ें उठ रही थीं ।
देखते ही देखते वह देश के सबसे बड़े महंत के रूप में सामने आकर कहने लगा, "मैंने अभी-अभी दंगाग्रस्त क्षेत्रों में रह रहे भाइयों से बातचीत की है। उनको सरकार से कोई शिकायत नहीं है।"
भीड़ छँटने लगी थी।
तभी विचित्र बात हुई। राजनीतिक कारणों से सरकार बर्खास्त कर दिए जाने की बात आग की तरह चारों ओर फैल गई थी।
लोग फिर उसके सामने जमा होने लगे। इस बार वह 'भाई-भाई' नामक फीचर फिल्म के रूप में दौड़े जा रहा था।
"हमें फिल्म नहीं चाहिए!" भीड़ में से किसी ने कहा।
"बर्खास्त सरकार के बारे में बताओ!"कोई दूसरा चिल्लाया।
"धर्मस्थल के बारे में बताओ!!" किसी तीसरे ने चिल्लाकर कहा।
वह उनकी चीख-चिल्लाहट की परवाह किए बिना फिल्म के रूप में दौड़ता रहा।
पढ़े-लिखे बेरोजगार युवक गुस्से में भर कर उसकी ओर बढ़ने लगे। किसी ने आगे बढ़कर उसका कान उमेठ दिया। वह अदृश्य हो गया।
"खाली—खाली—एमटि—एमटि—" अब केवल उसकी खरखराती आवाज़ सुनाई दी।
"क्या बकवास है" एक युवक दाँत पीसते हुए चिल्लाया।
"डेटा फीड करो—डेटा फीड करो—डेटा फीड करो—डेटा फीड करो—डेटा फीड —"वह किसी टेप की तरह बजने लगा।
लोग हैरान थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि सरकार के बर्खास्त होते ही उसे क्या हो गया है![14,15,16]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

निष्कर्ष

समय परिवर्तन के साथ समाज बदलता है और उसी के अनुसार कला और साहित्य का स्वरूप भी बदलता है। सामंती समाज में जब लोगो के पास अवकाश का
समय था ,तब महाकाव्यों एवं प्रबंध काव्यों की रचनाएँ हुईं। लम्बे समय तक गाए जानेवाले शास्त्रीय संगीत का ही बोलबाला था। लेकिन जब समय बदला तो साहित्य और कलाओं का स्वरूप भी बदला। यातायात के विविध साधनों ने राष्ट्रों के बीच की दूरियाँ कम कर दी। विश्व के हर कोने तक आवागमन शुरू हुआ। परिणामस्वरूप साहित्य और कलाओं का स्वरूप भी बदला। कलाओं में कोलाज, संगीत में फ्यूजन और साहित्य में क्षणिकाओं, लघुकथाओं और हाइकु का लिखा जाना वैश्विक धरातल पर आदान-प्रदान के साथ-साथ भागती हुई जिंदगी की जरूरत बना।
आज लोगों के पास इतना समय नहीं है कि वे महाकाव्य एवं प्रबंध काव्य की रचना कर सकें और उसे पढ़ सकें। भागती हुई जिंदगी के मर्म को छूने और उन्हें एक वैचारिक आयाम देने के लिए रचनाओं का लघु कलेवर में लिखा जाना आज की जरूरत है। यही कारण है कि आज लघुकथाएँ सर्वाधिक लिखी और पढ़ी जा रही हैं। मानवीय संवेदनाओं के विविध पक्षों को स्पर्श करने एवं उसे कलात्मकता के साथ भलीभाँति रूपायित करने में आज लघुकथा एक सशक्त विधा बन चुकी है। वही रचनाएँ आने वाले समय में स्वीकारी जाएँगी जो मनुष्य के मनोभावों के साथ सामंजस्य बैठा सकें और उसे वैचारिक दिशा दे सकें ।[18,19]
हिन्दी कहानी-लेखन के साथ लघुकथाएँ भी लिखी गईं लेकिन तब वे अपनी पहचान नहीं बना पाईं। उपन्यास, कहानी और नाटक ही लोकप्रिय हुए। परंतु आज कथा के क्षेत्र में लघुकथाएँ केंद्रीय विधा का स्थान लेने जा रही हैं। लघुकथाओं को लोकप्रिय बनाने में प्रकाशन तंत्र की उल्लेखनीय भूमिका है। पत्र-पत्रिकाओं के साथ-साथ नेट की दुनिया में ई-मैगजीन के द्वारा भी लघुकथाएँ सर्वाधिक लिखी और पढ़ी जा रही हैं। आज सुकेश साहनी,रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु',सतीशराज पुष्करणा,बलराम, सुभाष नीरव , अशोक भाटिया आदि अनेक लेखकों के योगदान को लघुकथा के लिए सराहा जा रहा है।
इनके प्रयासों ने ही आज पाठकों को लघुकथा पढ़ने, लिखने और उस पर विचार व्यक्त करने का सामर्थ्य प्रदान किया है। लघुकथाओं में मेरी पसंद की लघुकथा में – पेंशनर-मुरलीधर वैष्णव और प्रियंका गुप्ता की लिखी लघुकथाएँ 'भूकंप' सर्वाधिक सशक्त और प्रभावशाली लगी।
। अवकाश प्राप्त सरकारी कर्मचारी को अपनी ही जमा रकम एवं पेंशन के लिए अपने ही सरकारी तंत्र से कितना जूझना पड़ता है , को बखूबी बयान करती है मुरलीधर वैष्णव की लघुकथा 'पेंशनर'। बैंक मैनेजर मामूली सी औपचारिकताओं को पूरा करने में कितनी हीला-हवाली करता है। रिटायर्ड कर्मचारी अपनी लड़की की शादी के लिए अपना ही फंड पाने के लिए परेशान हो जाता है। अंत में जब वह मरने-मारने पर उतारू हो जाता है तो टाल-मटोल करने वाला वही बैंक मैनेजर उसकी सारी धनराशि का शीघ्र भुगतान कर देता है।प्रश्न उठता है कि क्यों सरकारी तंत्र इतना निष्क्रिय और निष्ठुर हो जाता है ? इस लघुकथा का यह वाक्य 'ईमानदारी और तंगी का चोली दामन का संबंध है 'अत्यंत ही मर्मस्पर्शी है। लघु कलेवर में होने के साथ ही साथ अपने प्रभाव में भी यह लघुकथा पूर्णतः सक्षम हैं जो पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं ।[20]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "सुकेश साहनी का परिचय". मूल से 4 जुलाई 2013 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 मई 2014.
2. ↑ सुकेश साहनी (1991/2010). डरे हुए लोग (सजिल्द). अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-110030. पृ° 126. आई°ऍस°बी°ऍन° 9788174083876. |year= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
3. ↑ सुकेश साहनी (1998). ठंडी रज़ाई. अयन प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली-110030. पृ° 112. ASIN B0000E73E1.
4. ↑ सुकेश साहनी (2001). लघु अपराध कथाएं (अजिल्द). पुस्तक महल. पृ° 125. आई°ऍस°बी°ऍन° 9788122307023.
5. ↑ "व्यक्तित्व: सुकेश साहनी". मूल से 4 जुलाई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 मई 2014.
6. कांटोर और मैस्लोन, पीपी. 350-51
7. ^ इंटरनेट ब्रॉडवे डेटाबेस पर बीसवीं सदी पर
8. ^ "मैडलिन काह्न लीव्स 'ऑन ट्वेंटीथ सेंचुरी'" , द न्यूयॉर्क टाइम्स , 25 अप्रैल, 1978, पृ. 46
9. ^ कोरी, जॉन. "ब्रॉडवे; टेरेंस मैकनेली के पास पतझड़ के कारण मंच के बारे में एक कॉमेडी है" , द न्यूयॉर्क टाइम्स , 5 मई 1978, पृ. सी2

10. ^ "टूर कास्ट" , ब्रॉडवेवर्ल्ड.कॉम, 13 फरवरी 2015 को एक्सेस किया गया
11. ^ "कास्ट" ब्रॉडवेवर्ल्ड.कॉम, 13 फरवरी 2015 को एक्सेस किया गया
12. ^ "प्रोडक्शन" ब्रॉडवेवर्ल्ड.कॉम, 13 फरवरी 2015 को एक्सेस किया गया
13. ^ "ओलिवियर विनर्स, 1980" संग्रहीत 2014-02-27 पर वेबैक मशीन , olivierawards.com, 13 फरवरी 2015 को एक्सेस किया गया
14. ^ विंडमैन, मैट. "रिव्यू: ऑन द ट्वेंटिएथ सेंचुरी एट द न्यू एम्स्टर्डम थिएटर" , थिएटरसीन.नेट, 6 फरवरी 2011 को एक्सेस किया गया
15. ^ गन्स, एंड्रयू। बीसवीं सदी पर 26 सितंबर को प्रस्तुत करने के लिए अभिनेताओं का कोष " संग्रहीत 2012-10-20 वेबैक मशीन पर , Playbill.com, 27 जून, 2005
16. ^ "समीक्षा" westendwhingers.wordpress.com, 16 दिसंबर 2010
17. ^ गार्डनर, लिन. "समीक्षा" , द गार्जियन , 5 जनवरी 2011
18. ^ गन्स, एंड्रयू। "स्कारलेट जोहानसन, जॉन हैम, ह्यू जैकमैन, क्रिस्टिन चेनोवेथ ने राउंडअबाउट रीडिंग में भाग लिया" , Playbill.com, 7 मार्च, 2011
19. ^ गन्स, एंड्रयू। " ऑन द ट्वेंटिएथ सेंचुरी रिवाइवल, स्टारिंग क्रिस्टिन चेनोवैथ, एक्सटेंड्स ऑन ब्रॉडवे" , प्लेबिल, 30 अप्रैल, 2015
20. ^ मिलवर्ड, टॉम. "ऑन द ट्वेंटिएथ सेंचुरी ने पूरी कास्टिंग की घोषणा की" , न्यूयॉर्क थिएटर गाइड , 25 नवंबर 2014
21. ^ मैकरेडी, राचेल। "टोनी पुरस्कार 2015: विजेताओं की पूरी सूची!" , हमें साप्ताहिक पत्रिका , 7 जून 2015
22. ^ फिलिचिया, पीटर. "सर्वश्रेष्ठ संगीत खोने के लिए सर्वश्रेष्ठ संगीत में से एक" , क्रिट्ज़रलैंड.कॉम, 20 मार्च, 2015
23. ^ "बीसवीं सदी के ब्रॉडवे पर @ सेंट जेम्स थिएटर - टिकट और छूट" । प्लेबिल । 15 नवंबर, 2020 को लिया गया ।
24. ^ "इनसाइड प्लेबिल गैलरी" । प्लेबिल । 15 नवंबर, 2020 को लिया गया ।

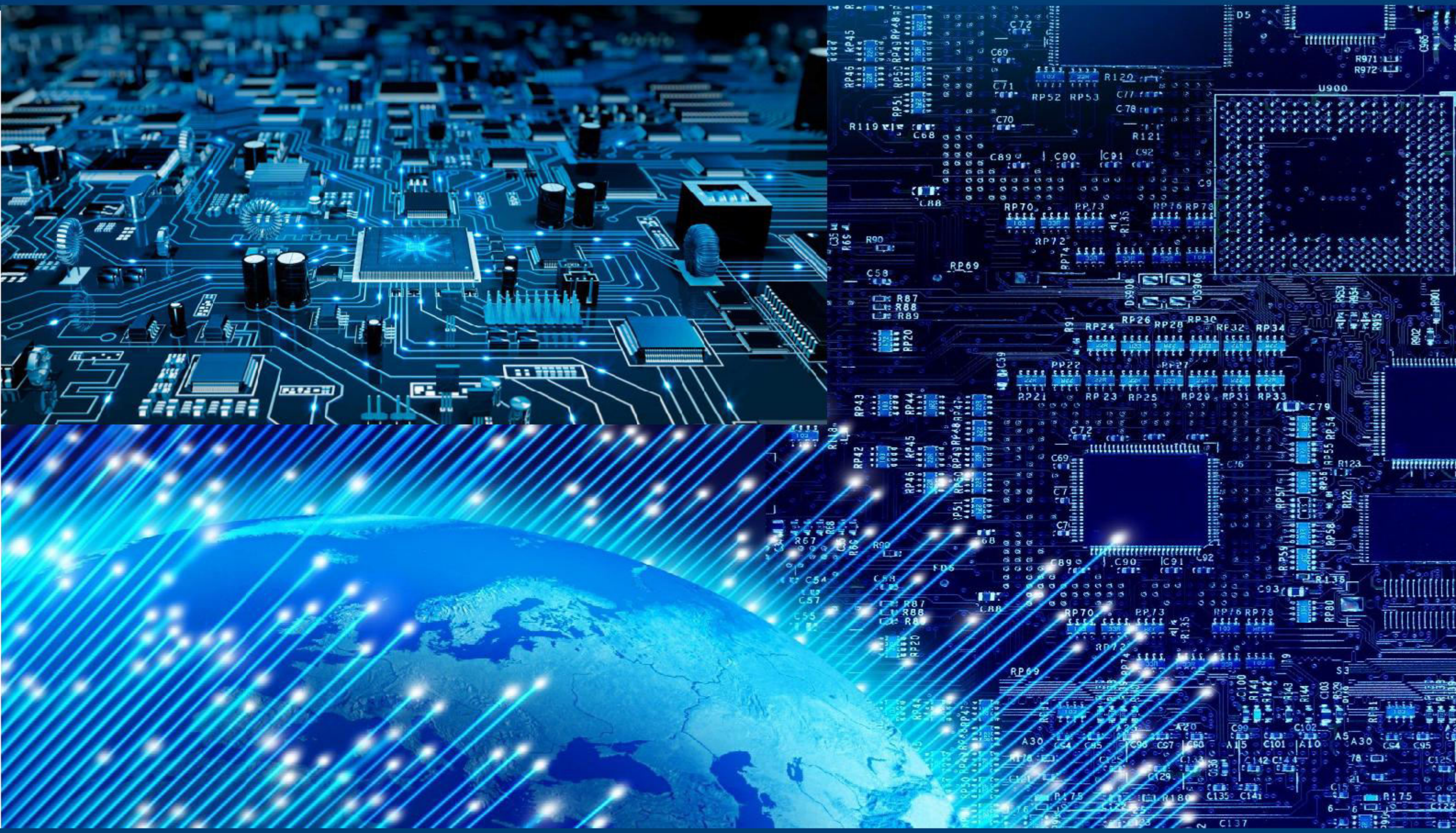

IJARASEM

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com